Date - 17/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह

मनोविज्ञान विभाग

महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

असामान्य व्यवहार के कारण
(Causes of Abnormal Behavior)

व्यवहार कभी भी व्यक्ति में अचानक नहीं होता है, असामान्य व्यवहार के कारणों की व्याख्या करने के लिए तीन तरह के विचारधारों को अपनाया गया है। जैविक विचारधारा , मनोसामाजिक विचारधारा , सामाजिक सांस्कृतिक विचारधारा । प्रत्येक विचारधारा द्वारा असामान्य व्यवहार की व्याख्या एक भिन्न दृष्टिकोण से करने का सफल प्रयास किया गया है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों तथा अन्य विशाल द्वारा किए गये अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि असामान्य व्यवहार के कुछ इन विशिष्ट कारणों के अलावा कस सामान्य कारण भी होते हैं जिनके स्वरूप के आधार पर इन्हें निम्नांकित चार भागों में बाँटा गया है

1 प्राथमिक कारण ***(Primary Causes)***

2 पूर्ववृत्ति कारण ***(Predisposing Causes)***

3 प्रेरित कारण ***(Precipitating Causes)***

4 पुनर्बलित कारण ***(Reinforcing Causes)***

1 प्राथमिक कारण **(Primary Causes)**-इससे तात्पर्य वैसी अवस्थाओं से होता है जिसे विकृति उत्पन्न करने के लिए आवश्यक माना जाता है। उदाहरणस्वरूप सामान्य पैरेसिस जैसे मानयिक विकृति को होने के लिए मस्तिष्क में उपदंभ का होना अनिवार्य है। प्राथमिक कारण को किसी मानसिक विकृति के होने के लिए आवश्यक तो माना जाता है परंतु इसे हमेशा पर्याप्त कारण नहीं माना जाता। इसका मूल कारण यह होता है बहुत सारे मानसिक रोग होते है जिसका कोई प्राथमिक कारक नहीं होता।

2 पूर्ववृत्ति कारण **(Predisposing Causes**)-इसके अन्तर्गत उन अवस्थाओं या कारकों को रखा जाता है जो विकृति उत्पन्न होने के पहले ही उत्पन्न होकर विशेष परिस्थिति में विकृति होने की सम्भावना को बढ़ा देना है। जैसे माता-पिता द्वारा तिस्कार एक ऐसा ही कारक है जो तरह-तरह के समायोजन सम्बंधी समस्याएँ तथा

असामान्य व्यवहार बच्चों में उत्पन्न करता है। स्पष्टतः तब पूर्ववर्ती कारक व्यक्ति में पहले से ही उपस्थित होकर असामान्यता के प्रति उन्मुखता को बढ़ा देता है।

3 प्रेरित कारण (Precipitating Causes)-इससे तात्पर्य वैसे कारकों से होता है जो व्यक्ति के लिए वर्तमान में वर्दाश्त से बाहर से जाता है और उसमें विकृति उत्पन्न कर देता है। जैसे किसी कार्य में व्यक्ति को अप्रत्याशित असफलता हाथ लगती है तो उसे काफी निराशा एवं कुंठा उत्पन्न होता है जो बाद में व्यक्ति में असामान्य व्यवहार पैदा करता है।

4 पुनर्बलित कारण (Reinforcing Cause)- इसके अन्तर्गत उन कारकों या अवस्थाओं को रखा जाता है जो पहले से हो रहे असामान्य व्यवहार को संपोषित करके रखता है। जैसे जब कोई व्यक्ति बीमार पड़ जाता है, तो परिवार के सदस्यों द्वारा उस पर काफी ध्यान, सहानुभूति दिखलाया जाता है साथ ही उसे बहुत सारे उत्तरदायित्वों से उसे मुक्ति भी मिल जाती है। ये सभी कारक परोक्ष रूप से व्यक्ति को पुनः बीमार पड़ने के लिए पुनर्बलित करता है ताकि उसे पुनः सहानुभूति मिल सके एवं उत्तरदायित्वों से छुटकारा मिल सके।

निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि असामान्य व्यवहार या मानसिक विकृति को उत्पन्न करने में कुछ सामान्य कारकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।